ए वेला तेरे हथ नई आउना

उठ कै देइ ए बरोड़ गुजरी ,
ए वेला तेरे हथ नहीं आउना ,
खर्चेगी लाख-करोड़ गुजरी, ए वेला तेरे हथ नहीं आउना |

काहे दी मटकी, काहे दी मधानी,
काहे दी लाइ ए डोर गुजरी,
ए वेला तेरे हथ नहीं आउना ।

तन दी मटकी, मन दी मधानी,
सूरत-शब्द की ये डोर गुजरी,
ए वेला तेरे हथ नहीं आउना ।

सत्संग दा तू जाग लगाईं लै,
जे तैनू वाखन दी लोड़ गुजरी,
ए वेला तेरे हथ नहीं आउना ।

एसा दिया जो तू देइ कर बरोड़ी,
माखन लेंगी बरोड़ गुजरी,
ए वेला तेरे हथ नहीं आउना ।

नाम अमिरस चाखन चाहे,
मन विषया कोड़ो मोड़ गुजरी,
ए वेला तेरे हथ नहीं आउना ।

कहत कबीर सुनो भाई साधो ,
गुर चरना चित जोड़ गुजरी,
ए वेला तेरे हथ नहीं आउना ।

उठ कै देइ ए बरोड़ गुजरी,
ए वेला तेरे हथ नहीं आउना,
खर्चेगी लाख-करोड़ गुजरी, ए वेला तेरे हथ नहीं आउना ।

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/1514/title/eh-vela-tere-hath-nahi-auna-Radhaswami-Shabad-with-Hindi-lyrics

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |